हवे केटलो तमने कहूं विस्तार, एक एह वचन ग्रहजो निरधार।
हेत करीने कहूं छूं साथ, ओलखजो प्राणनो नाथ।। १३ ।।

अब इसका विस्तार तुम्हें मैं कहां तक कहूं? इस एक वचन को ग्रहण करना जिसे मैं तुम्हें, हे सुन्दरसाथ! अपना समझकर प्यार से कहती हूं। इन सबका सार एक वचन यह है कि अपने प्राणनाथ को पहचानो।

गुण लखवा वालो ते एह, आपणमां बेठा छे जेह।
इंद्रावती कहे आ ते रे ते, जेणे गुण कीधां ते ए रे ए।। १४ ।।

वही प्राणनाथ गुण लिखने वाले हैं। यह अपने बीच में बैठे हैं! श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि सुन्दरसाथजी! आओ जिन प्राणनाथ ने अपने ऊपर इतनी मेहर (कृपा) की है, यह वही तुम्हारे प्राणनाथ हैं।

तारे केहेवुं होय ते केहे रे केहे, लाभ लेवो होय ते ले रे ले।
तारतम कहे छे आ रे आ, हजार वार कहूं हां रे हां।। १५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब तुम्हें जो कहना हो वह कहो। लाभ लेना हो, तो लो। तारतम वाणी कहती है, यही अपने प्राणनाथ हैं। मैं भी हजार बार स्वीकार करती हूं।

मायासूं करजे नां रे नां, फोकट फेरो मा खा रे खा।
धणीने चरणे जा रे जा, एवो नहीं लाधे दा रे दा।। १६ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब माया को नाकारा कर दो (छोड़ दो)। व्यर्थ में आवागमन के चक्कर से बचो। धनी के चरणों में जाओ। फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

जो चूक्यो आंणें ता रे ता, तो कपालमां लागसे घा रे घा।
संसारमां नथी कांई सा रे सा, श्री धाम धणी गुण गा रे गा।। १७ ।।

हे साथजी! यदि तुम ऐसा अवसर चूक गए तो समझो तुम्हारे माथे में बड़ी चोट लगेगी (बहुत बड़ा भारी नुकसान हो जाएगा)। इस संसार में कोई वस्तु सार (सत्य) नहीं है. इसलिए धाम धनी के गुण गाओ।

पोताना पगले था रे था, मा मूके तारो चाह रे चाह।
तारा जीवने प्रेम तूं पा रे पा, जेम सहू कोई कहे तूंने वाह रे वाह।। १८ ।।

हे साथजी! अपने आपको अपने रास्ते पर लाओ और अपनी चाहना धनी से अलग मत करो। अपने जीव को धनी का प्रेम प्राप्त कराओ (अपने जीव से धनी के साथ प्यार कर) जिससे तुम्हें सब कोई 'वाह-वाह' कहे।

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ १०३० ॥

गुण केटला कहूं मारा वाला, अमसूं कीधां अति घणा जी।
आणी जोगवाई ने आणी जिभ्याए, केम केहेवाय वचन तेह तणा जी।। १ ।।

हे मेरे प्रीतम! आपके गुणों का (मेहर का) जो आपने मेरे से किए हैं, कहां तक बयान करूं (मेरे पर मेहेर की)। इस तन से तथा इस जबान से उन गुणों को वचनों में कैसे कहा जाए?

वृज तणा सुख आंहीं आवीने, अमने अति घणा दीधां जी।
रास तणी रामतडी रमाडी, आप सरीखडा कीधां जी।। २ ।।

ब्रज के सुख यहां आकर हमको बहुत ज्यादा दिए। रास की रामत खिलाकर अपने समान बना लिया।

Nijanand App

भगवानजी केरी रामतडी, जोयानी हुती मूंने खांत जी।
नौतनपुरी मांहें आवी करीने, मूने चींधी देखाड्यो द्रष्टांत जी।। ३ ।।

अक्षर भगवान के खेल देखने की हमें चाहना थी। नौतनपुरी में आकर के दृष्टान्त देकर आडीका (चमत्कारिक) लीला करके दिखाई।

श्री धामतणा सुख केणी पेरे कहूं, जे तारतमे करी तमे दीधां जी।
नौतनपुरीमां मनोरथ कीधां, ते विध विधना मारा सीधां जी।। ४ ।।

परमधाम के सुखों का कैसे वर्णन करूं? इसे आपने तारतम वाणी से दिया। जो इच्छाएं कीं वह सभी तरह से नौतनपुरी में पूरी कीं।

सेहेजल सुखमां झीलतां, दुख न जाणिए कांई जी।
दुस्तर जल सुपनमां देखी, हूं जांणी ते घरनी बडाई जी।। ५ ।।

परमधाम में हम सदा ही सुख में रहते थे। दुःख क्या होता है, नहीं जानते थे। उन कठिन दुःखों को सपने के ब्रह्माण्ड में देखा। तब घर के सुखों की लज्जत का पता चला।

इंद्रावती कहे अति उछरंगे, तमे लाड अमारा घणा पाल्या जी।
निरमल नेत्र करी जीवना, तमे पडदा पाछा टाल्या जी।। ६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी उमंग के साथ कहती हैं कि मेरे धनी! आपने हमें बहुत लाड लडाए तथा हमारे जीव के नेत्र निर्मल करके माया का परदा (अज्ञान के परदे को) हटा दिया।

आपोपूं ओलखावी करीने, पोताने पासे तेडी लीधी जी।
इंद्रावती ने एकान्त सुख दीधां, आप सरीखडी कीधी जी।। ७ ।।

आपने अपनी पहचान कराकर अपने पास बुला लिया और श्री इन्द्रावतीजी को अपने समान करके एकान्त में अधिक सुख दिए।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। १०३७ ।।

प्रगट वाणी

हवे सैयरने हूं प्रगट कहूं, आपणों वास श्री धाममां रहूं।
अछरातीत ते आपणा घर, मूल वैकुंठ मांहें अछर।। १ ।।

अब सुन्दरसाथ को मैं कहती हूं कि अपने रहने का ठिकाना श्री परमधाम है। अक्षरातीत अपना घर है। मूल बैकुण्ठ अक्षर के हृदय में है (बैकुण्ठ का मूल अक्षर में है)।

ए वाणी चित धरजो ब्साथ, दया करी कहे प्राणनाथ।
ए किव करी रखे जाणो मन, श्री धणी लाव्या धामथी वचन।। २ ।।

इस वाणी को सुन्दरसाथ चित्त में धरना। बड़ी कृपा करके अपने प्राणनाथ कह रहे हैं। यह नहीं समझ लेना कि यह वाणी कविता करके लिखी गई है। यह वचन तो धाम धनी परमधाम से लाए हैं।

ते तमने कहूं प्रगट करी, मूल वचन लेजो चित धरी।
हवे तारतम जो जो प्रकास, तिमर मूलथी करूं नास।। ३ ।।

इसको मैं प्रकट करके कहती हूं। अपने इन मूल के वचनों को चित्त में धर लेना। अब तारतम वाणी के उजाले को देखो। जिससे अन्धकार का (अज्ञानता का) मूल से ही नाश कर देती हूं।

Nijanand App